''भूमण्डलीकरण के संदर्भ में प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चेतना का अध्ययन''

दयालबाग शिक्षण संस्थान(डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा
की हिन्दी विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु
शोध विषय की रूपरेखा
2014

निर्देशिका

डॉ. कमलेश कुमारी रवि
एसो. प्रोफेसर
एम.ए. हिन्दी, इतिहास, बी.एड.
पी–एच.डी. एवं पोस्ट
ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पत्रकारिता,
हिन्दी विभाग, कला संकाय, डी.ई.आई.
दयालबाग, आगरा।

शोधार्थिनी

राधा गुप्ता

हिन्दी विभाग, कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान(डीम्ड विश्व विद्यालय)
दयालबाग, आगरा – 282005

''भूमण्डलीकरण के संदर्भ में प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चेतना का अध्ययन''

भूमण्डलीकरण का सामान्य अर्थ 'वैश्विक सांस्कृतिक व्यवस्था' और भूमण्डलीकरण का पहला और प्रधान अर्थ है एक विष्व बाजार अर्थतंत्र और विश्व बाजार का निर्माण। भूमण्डलीकरण अथवा वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दूरी व अन्य अवरोधों को दूर कर विश्व के सभी व्यक्तियों को अधिक निकट लाने तथा आपसी संबंधों को दृढ़ बनाने पर बल दिया जाता है वैश्वीकरण के माध्यम से भूमण्डलीकरण, सामाजिक संबंधों और आदान–प्रदान को भली भाँति, अन्तः क्षेत्रीय क्रिया–कलापों, अन्तःक्रियाओं तथा शक्तियों को आदान–प्रदान करने वाले संजाल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

भूमण्डलीकरण के द्वारा विश्व के सभी व्यक्ति, समाज व राष्ट्र कार्यक्षेत्र अथवा आधुनिक सुख–सुविधाओं के कारण एक दूसरे से पूर्ण रूप से जुड़ गये है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा सत्य प्रतीत होने लगी है। भूमण्डलीकरण का जितना प्रभाव आर्थिक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होता है उतना ही आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षा ज्ञान के सृजन, संरक्षण तथा हस्तान्तरण की प्रक्रिया में केन्द्रीय स्थान प्राप्त कर चुकी है। इस प्रक्रिया का सर्वाधिक प्रभाव उच्च शिक्षा पर पड़ा है। बदलते परिवेष में उच्च षिक्षा के लिए अनेक अवसरों के साथ–साथ अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई है।

21वीं सदी का समय केवल बाजार का समय है इस सदी पर भूमण्डलीकरण और बाजारवाद की मार है। कम्प्यूटर, मोबाईल और इन्टरनेट ने तो प्रेम की परिभाषा ही बदल दिया है। देह के राग को बन्धन मुक्त कर दिया है। आज व्यक्ति एक वस्तु के रूप में बदल चुका है और स्त्री के लिए भी माल शब्द का प्रयोग बड़े जोर–शोर से चल रहा है। बाजारवाद और भूमण्डलीकरण ने सबसे पहले व्यक्ति के दिमाग पर अपना कब्जा जमाया है। बाजारवाद ने हमारे नैतिकता, आदर्श, सच्चाई, सभ्यता, कुल, मर्यादा को ताक पर रख दिया है।

विश्व का चाहे कोई भी देश हो, स्त्री के प्रति लगभग पुरुषवादी मानसिकता पति, बॉस, सेक्स, सौन्दर्य, आदर्श, कर्तव्य, अन्य भावनात्मक और सगे सम्बन्धों आदि के माध्यम

से दिखती है। भूमण्डलीकरण की इस नीति में स्त्रियों का शोषण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में हो रहा है। चूकि यह नीति भी विश्व के पूँजीपति पुरुषों द्वारा ही निर्धारित की गयी है जहाँ स्त्री जड़ परम्परावादी पुरुष के लिए वस्तु की तरह है उसी पुरुष ने आज बाजार में उसे वस्तु की तरह ला खड़ा किया है। चाहे वह बाजार नौकरी के झाँसे या देशों की लड़कियों को नाजायज रूप से दूसरे देश तक सेक्स–आनन्द के लिए वस्तु के रूप में इस्तेमाल किया है। बाजार ने तो सुन्दरता का भी पैमाना तय कर दिया है कि फलाने क्रीम, लिपिस्टिक, कपड़े आदि पहनकर आप सुन्दर और बोल्ड सेक्सी दिख सकती है। आज भूमण्डलीकरण का ही परिणाम है कि स्त्री के प्रति शोषण, अमानवीयता जैसे कदम के विरोध को लेकर विश्व भर में अलग–अलग रूपों में सही, एक प्रकार की स्त्री एकता है, जो शायद बिना भूमण्डलीकरण के इतनी आसानी से संभव नही हो पाती।

भूमण्डलीकरण के प्रभाव से साहित्य भी अछूता नहीं रह सकता वह भी उपन्यास साहित्य जो व्यक्ति के जीवन का सर्वांगीण रूप से चित्रांकन करता है। समकालीन महिला उपन्यासकार प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा उनके उपन्यास भी भूमण्डलीकरण के प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री चेतना के ऐसे प्रश्न उठाए गए हैं जिसने काफी हद तक पुरुषवादी मानसिक संरचना को बदला है जिससे स्त्री विमर्श को नए आयाम मिले है जिनसे ठोस संभावना सबल हो रही स्त्री के समक्ष और भी व्यापक रूप से सुरसा रूपी चुनौतियों के समान उपस्थित है साथ ही मजदूर वर्ग और उसके ऊपर के वर्ग की स्त्री की आजादी और श्रम की सार्थकता के लिए नई जमीन तैयार की जाती है जहाँ चारों ओर से प्रताड़ित मजदूर वर्ग की स्त्री और वही दूसरी निम्न मध्यवर्ग से लेकर उच्चवर्ग की स्त्रियों के बीच मनोवैज्ञानिक और ठोस सामाजिक आधार है जिसका सामूहिक प्रभाव स्त्री की अपनी–अपनी स्थितियों के हिसाब से उसे उबारने और उससे लड़ने में सहयोग प्रदान करता है

मेरे शोध का उद्देश्य है कि भूमण्डलीकरण के संदर्भ में राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से स्त्री पर हो रहे अत्याचार, अपमान, बलात्कार और शोषण के विरुद्ध चेतना विकसित और उसका अन्त करना, स्त्रियों में जागरूकता उत्पन्न करना, साहित्य और समाज में परमपरा से चले आ रहे सह–भाव को सही रूप में प्रमाणित करते हुए मेरा यह षोध कार्य प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के

माध्यम से महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कराना तथा समाज निर्माण में साहित्य की भूमिका को पुनःर्व्याख्यायित करना जिससे एक नई दृष्टि और मानवतावादी संस्कृति निर्मित हो सके।

विहंगम अवलोकन द्वारा शोधकर्त्री ने पाया है कि इस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है अतः **''भूमण्डलीकरण के संदर्भ में प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चेतना का अध्ययन''** इस विषय पर शोधकर्त्री का मौलिक एवं नवीन कार्य होगा।

आशा करती हूँ कि ''भूमण्डलीकरण के संदर्भ में प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चेतना का अध्ययन'' शोध जगत के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शोधार्थिनी

राधा गुप्ता

रूपरेखा

''भूमण्डलीकरण के संदर्भ में प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चेतना का अध्ययन''

भूमिका– विषय चयन, पूर्ववर्ती कार्य मौलिकता एवं महत्त्व

प्रथम अध्याय– भूमण्डलीकरण की अवधारणा

1.1 भूमण्डलीकरण का अर्थ, परिभाषा, और स्वरूप
1.2 भारत में भूमण्डलीकरण
1.3 भूमण्डलीकरण एवं महिलाएं
1.4 भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यासों में स्त्री चेतना

द्वितीय अध्याय– स्त्री चेतना : आशय, स्वरूप एवं विविध आयाम

2.1 स्त्री चेतना : भारतीय संदर्भ और संकल्पना

2.2 स्त्री चेतना : पाश्चात्य संदर्भ और संकल्पना

2.3 स्त्री चेतना के विविध आयाम

तृतीय अध्याय– भूमण्डलीकरण के संदर्भ में प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री चेतना

3.1 औद्योगिकीकरण और बाजारवाद

3.2 आर्थिक चेतना

3.3 पारिवारिक संबंध और स्त्री

3.4 विद्रोह चेतना

3.5 अधिकार चेतना

3.6 उपसंस्कृति और स्त्री चेतना

चतुर्थ अध्याय– भूमण्डलीकरण के संदर्भ में अलका सारावगी के उपन्यासों में स्त्री चेतना

4.1 औद्योगिकीकरण और बाजारवाद

4.2 आर्थिक चेतना

4.3 पारिवारिक संबंध और स्त्री

4.4 विद्रोह चेतना

4.5 अधिकार चेतना

4.6 उपसंस्कृति और स्त्री चेतना

पंचम अध्याय– भूमण्डलीकरण के संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चेतना

5.1 औद्योगिकीकरण और बाजारवाद

5.2 आर्थिक चेतना

5.3 पारिवारिक संबंध और स्त्री

5.4 विद्रोह चेतना

5.5 अधिकार चेतना

5.6 उपसंस्कृति और स्त्री चेतना

षष्ठ अध्याय– भूमण्डलीकरण के संदर्भ में प्रभा खेतान, अलका सारावगी एवं मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

6.1 साम्य

6.2 वैषम्य

उपसंहार।

परिशिष्ट– **आधार ग्रन्थ**

सहायक ग्रन्थ

शब्दकोश

पत्र–पत्रिकाएं

बेब साइट

नोट– उपर्युक्त अध्यायों में शोध निर्देशिका के परामर्श से कुछ परिवर्तन किए जा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ

1. अलका सारावगी 'कलिकथा वाया बाईपास' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–1998
2. अलका सारावगी 'शेष कादम्बरी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–2002
3. अलका सारावगी 'कोई बात नहीं' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली– 2004
4. अलका सारावगी 'एक ब्रेक के बाद' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली– 2008
5. प्रभा खेतान 'छिन्नमस्ता' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली– 1993
6. प्रभा खेतान 'पीली आँधी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली– 2001
7. प्रभा खेतान 'अपने अपने चेहरे' राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली– 2010
8. प्रभा खेतान 'अग्नि सम्भवा' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. प्रभा खेतान 'तालाबन्दी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. प्रभा खेतान 'आओ पे पे घर चलें' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. मैत्रेयी पुष्पा 'स्मृति दंश' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–1990
12. मैत्रेयी पुष्पा 'वेतवा बहती रही' किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली–1993
13. मैत्रेयी पुष्पा 'इदन्नमम' किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली–1994
14. मैत्रेयी पुष्पा 'चाक' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–1997
15. मैत्रेयी पुष्पा 'झूला नट' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–1999
16. मैत्रेयी पुष्पा 'अल्मा कबूतरी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–2000
17. मैत्रेयी पुष्पा 'अगनपाखी' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–2001
18. मैत्रेयी पुष्पा 'विजन' किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली–2002
19. मैत्रेयी पुष्पा 'कहीं ईसुरी फाग' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–2004
20. मैत्रेयी पुष्पा 'त्रिया हठ' किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली–2006

सहायक ग्रन्थ

1. अभय कुमार दुबे– 'भारत का भूमण्डलीकरण' वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2007

2. डॉ. ई. विजय लक्ष्मी– 'उपन्यासों के सरोकार' राधा कृष्ण, नई दिल्ली–2013

3. कुमार भास्कर– 'भूमण्डलीकरण और स्त्री' संजय प्रकाशन, दिल्ली–2008

4. गणपति चंद्र गुप्त– 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1857

5. गोविन्द त्रिगुणायत– 'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त' भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली–1956

6. दीप्ती प्रिया मल्होत्रा– 'भारतीय महिला आन्दोलन' सम्पूर्णा ट्रस्ट–2007

7. प्रभा खेतान– 'भूमण्डलीकरण ब्रांड, संस्कृति और राष्ट्र' सामयिक प्रकाशन, दिल्ली–2008

8. प्रभा खेतान– 'उपनिवेश में स्त्री' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–2003

9. डॉ. लाल साहब सिंह– 'हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली–1998

10. डॉ. विप्लव– 'महिला सशक्तिकरण' राहुल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ–2013

11. सचिदानन्द सिन्हा– 'भूमण्डलीकरण और चुनौतियाँ' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–2007

12. डॉ. सुनीला सक्सैना– 'महिला उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना एवं शिक्षा' आशा पब्लिशिंग कम्पनी, आगरा–2004

13. शील प्रभा वर्मा– 'महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ' प्रकाशन, विद्या बिहार कानपुर–1987

14. क्षमा शर्मा– 'स्त्रीत्ववादी विमर्श' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–2002